दिल्ली, उ0प्र0, हरियाणा, पंजाब, गुजरात एवं राजस्थान में प्रसारित।

गुरुकृपा दर्पण

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

UTTHIN/2022/85670

डाक सं० UA/DO/DON/02/2024-2026

वर्ष : 04 | अंक : 08 | हरिद्वार | शनिवार, 22 फरवरी, 2025 | मूल्य : एक रुपया | पृष्ठ : 4

पहली बार 1 लाख करोड़ से अधिक का बजट हमारा सौभाग्य: मुख्यमंत्री

जतिन शर्मा

देहरादून। बजट केवल एक वार्षिक वित्तीय दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह हमारे प्रदेश की आर्थिक दिशा, नीतियों और सामाजिक कल्याण पहलों को आकार देने का एक शक्तिशाली साधन है। बजट 2०25-26 का आकार लगभग 1,०1,175.33 करोड़ है। यह 2०24-25 के अनुमान 89,23०.०7 करोड़ से लगभग 13त्न अधिक है। पहली बार 1 लाख करोड़ से अधिक का बजट प्रस्तुत करने का सौभाग्य हमारी सरकार को प्राप्त हुआ है। राज्य गठन के उपरान्त 2००1-०2 में 4,5०6 करोड़ का बजट पेश किया गया था। इस प्रकार 24 वर्षों में लगभग 24 गुना बजट हमने आज प्रस्तुत किया है। लगभग 16.68त्न की वृद्धि के साथ इस बजट में 16,961.32 करोड़ का प्रावधान जेंडर बजट में किया गया है। इकॉलोजी, इकोनामी, इनोवेशन, टेक्नालॉजी, सस्टेनेबल व इन्क्लूजिव डेवलवपमेंट तथा एकाउन्टेबिलिटी के व्यापक फ्रेमवर्क को ध्यान में रखते हुए हम कार्य कर रहे हैं।

सरलता, समाधान और निस्तारीकरण द्वारा

विकास के अवरोध दूर कर रहे हैं।

हम ध्येय पथ पर बढ़ रहे हैं।

इस बजट में हम नई अनेक नई योजनाएं लेकर आये हैं-

वेंचर फंड की स्थापना,

रिवर फ्रन्ट डेवलपमेंट परियोजना,

प्रवासी उत्तराखण्ड परिषद,

यू.आई.आई.डी.बी. को परामर्शी सेवाओं एवं सर्विस सेक्टर सब्सिडी,

रेणुका जी बांध परियोजना मे राज्य की अंशपूंजी,

स्मार्ट सिटी के अन्तर्गत इलेक्ट्रिक बसों के संचालन,

खेल विश्वविद्यालय की स्थापना,

होमगार्ड कल्याण कोष,

मादक पदार्थों से सम्बन्धित अभियोग में कार्यवाही के लिए पुलिस कर्मियों आदि के उत्साहवर्धन हेतु रिवाल्विंग फंड की स्थापना,

सैनिक विश्राम गृहों की साज सज्जा,

यह बजट ह,, रू ह (नमो) यानि नवाचार, आत्मनिर्भर उत्तराखण्ड, महान विरासत व ओजस्वी मानव संसाधन की थीम पर आधारित है।

नमो का प्रथम बिन्दु ह अर्थात नवाचार के प्रतीक अनेक बिन्दु जैसे परिवार पहचान पत्र, पेपरलेस रजिस्ट्रेशन, बायोमैट्रिक आधारित आधार प्रमाणीकरण, फायर हाइड्रेन्ट मशीन, स्मार्ट मीटर, साईंस सॅन्टर, स्मार्ट क्लास के लिए बजट में प्रावधान किया गया है।

नमो के दूसरे बिन्दु अर्थात आत्मनिर्भर उत्तराखण्ड के लिए बजट में सप्तऋषि की अवधारणा दी गयी है- कृषि, उद्योग, ऊर्जा, अवसरंचना, संयोजकता, पर्यटन तथा आयुष। ये %सप्तऋषि आधुनिक उत्तराखण्ड के हमारे ग्रोथ इंजन हैं।

नमो के तीसरे बिन्दु रूअर्थात महान विरासत के संरक्षण के लिए अनेक पहल हमारी सरकार ने की है:-

शीतकालीन यात्रा, आदि कैलाश, ओम पर्वत आदि पवित्र स्थानों के लिए सड़क संयोजकता को सुगम बनाना, गोविंद घाट से घांघरिया मार्ग का नाम साहिबजादे जोरावर सिंह, बिडौरा छेवी पातशाही गेट से धूमखेड़ा मार्ग का नाम साहिबजादे फतेह सिंह मार्ग किए जाने की स्वीकृति आदि।

हरिद्वार और ऋषिकेश के पुनर्विकास, शारदा रिवर फ्रंट और इसके निकटवर्ती क्षेत्रों का विकास, कांवड़ मेले के आयोजन, अर्द्धकुम्भ मेले की प्रारम्भिक तैयारी, ऋषिकेश में हिमालयन संग्रहालय की स्थापना हेतु विभिन्न मेलों के आयोजन, संस्कृत पाठशालाओं व विश्वविद्यालय को अनुदान आदि हेतु बजट प्रावधान किये गये हैं।

संस्कृति के पावन मूल्यों की रक्षा,

प्रदेश का भविष्य उज्जवल करना तथा विकास भी और विरासत भी के सिद्धान्त पर अडिग रहना यह हमारी कार्यनीति है। इसका परिलक्षण इस बजट में होता है।

नमो के चौथे बिन्दु ह अर्थात ओजस्वी मानव संसाधन के लिए हमारी पहल -

उत्तराखण्ड वेंचर फंड की स्थापना, उद्यमिता को प्रोत्साहन, कृषकों को प्रोत्साहन, खेल सुविधाओं का विकास, खिलाडियों को प्रोत्साहन, देवभमि उद्यमिता योजना, छात्रवृत्तियाँ, शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम, प्रशिक्षण तथा साइंटिफिक टेम्परामेंट को प्रोत्साहन आदि।

केवल सरकार के प्रयास से नहीं,

जागृत जनता और ओजस्वी जनता से बनेगा विकसित उत्तराखण्ड ।

इस बजट में समावेशी व समग्र विकास के दृष्टिकोण से ज्ञान (त्ड्ढ्ढह) अर्थात गरीब, युवा, अन्नदाता एवं नारी कल्याण को केन्द्र में रखा गया है।

गरीब कल्याण हेतु बजटीय प्रावधान:-

सामाजिक सुरक्षा के अन्तर्गत विभिन्न पेंशन योजनाओं हेतु लगभग 1,811.86 करोड़

%विभिन्न योजनाओं में सब्सिडी हेतु लगभग 918.92 करोड़

अन्नपूर्ति योजना 6००.०० करोड़%

%प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) हेतु लगभग 2०7.18 करोड़%

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) हेतु लगभग 54.12 करोड

श्वड्ढ आवासों हेतु अनुदान 25.०० करोड़

परिवहन निगम की बसों में निर्धारित श्रेणी के यात्रियों हेतु नि:शुल्क यात्रा की सुविधा हेतु 4०.०० करोड़%

राज्य खाद्यान योजना हेतु 1०.०० करोड़

विधानसभा में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के साथ बजट प्रस्तुत करने जाते हुए वित्त मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल

जतिन शर्मा

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने विधानसभा में बजट पेश होने के उपरान्त मीडिया से औपचारिक वार्ता करते हुए उत्तराखण्ड के रजत जयंती वर्ष में ऐतिहासिक बजट पेश करने के लिए वित्त मंत्री और पूरी टीम को बधाई दी। उन्होंने कहा कि बजट राज्य सरकार की प्राथमिकताओं और संकल्पों को प्रस्तुत करता है। जो सरकार की भविष्य की योजनाओं को प्रस्तुत करता है।

गुरुकृपा दर्पण (राष्ट्रीय समाचार पत्र) को आवश्यकता है उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश के समस्त जिलों के लिए ब्यूरो चीफ, कैमरा मैंन, संवादाताओं की। सम्पर्क करें – 9410731129, 9548880101

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य निर्माण के रजत जयंती वर्ष में बजट के आकार ने ०1 लाख करोड़ को पार किया है। पिछले बजट की तुलना में इस वर्ष के बजट में 13 प्रतिशत वृद्धि हुई है। उत्तराखण्ड राज्य के प्रथम बजट से इस बार का बजट 24 गुना अधिक है। बजट ईकोलॉजी, इकोनोमी, इन्नोवेशन, इन्क्लूसिव और सस्टेनेबल डेवेलपमेंट के साथ-साथ टेक्नोलॉजी

और एकाउन्टेबिलिटी को ध्यान में रख कर बनाया गया है। रीवर फ्रंट डेवेलपमेंट योजना, प्रवासी उत्तराखण्ड परिषद का गठन, स्मार्ट सिटी के अंतर्गत इलेक्ट्रिक बसों का संचालन, खेल विश्वविद्यालय की स्थापना, होमगार्ड कल्याण कोष का गठन, पुलिस कर्मियों के उत्साहवर्धन के लिए रिवाल्विंग फंड की स्थापना जैसी अनेक नए पहलुओं को इसमें सम्मिलित किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह बजट (नमो) अर्थात नवाचार, आत्मनिर्भर उत्तराखंड, महान विरासत व ओजस्वी मानव संसाधन की थीम पर आधारित है। उन्होंने कहा कि बजट में राज्य के समावेशी एवं समग्र विकास के लिए (ज्ञान) अर्थात गरीब कल्याण, युवा, अन्नदाता एवं नारी कल्याण को केंद्र में रखा गया है। राज्य सरकार ने इस बजट में वित्तीय प्रबंधन पर भी विशेष जोर दिया है। उन्होंने कहा हम अपने संसाधनों से राज्य की आय बढ़ाने का प्रयास करेंगे। बजट में शिक्षा, ग्रामीण विकास, इंफ्रास्ट्रक्चर, चिकित्सा, उद्योग आदि क्षेत्रों के विकास पर भी विशेष घ्यान दिया गया है।

सम्पादकीय

हदय विदारक घटना

सम्पादक – **देवेन्द्र जौहरी**

भगदड़ की वजह से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ में अठारह लोगों की मौत हो गई जबकि अनेक घायल हुए हैं। प्रयागराज और मगध एक्सप्रेस के अतिरिक्त विशेष ट्रेनों से महाकुंभ जाने वालों की भीड़ स्टेशन पर बढ़ती जा रही थी। रेलवे प्रशासन अत्यधिक भीड़ बढने की वजह से यह घटना घटी बता रहा है। चश्मदीदों और यात्रियों का कहना कि पैदल पुल पर बेतहाशा बढ़ती भीड़ के कारण भगदड़ हुई। रेलवे पर कुछ ट्रेनों के अचानक रद्द करने का आरोप है। हैरत की बात है, रेलवे स्टेशन के प्रवेश द्वार पर कोई ऐसी व्यवस्था नहीं की गई जिससे भीड़ को बाहर ही रोका जा सके। लोगों ने ज्यादा टिकट बुक कराई तब भी रेल-प्रशासन नहीं चेता। कुचल कर मरने की ऐसी घटनाएं प्रशासनिक/व्यवस्थागत असफलता हैं। इनकी लगातार पुनरावृत्ति बताती है, हम अभी भी उन्नीसवीं सदी में जी रहे हैं। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी और पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने का दंभ भरने वालों को इस भीषण भगदड़ में मारे जाने वालों के प्रति तनिक क्षोभ नहीं होता। महाकुंभ में डुबकी लगाने वाले श्रद्धालुओं का भारी जमावड़ा अयोध्या और वाराणसी में भी प्रसिद्ध मंदिरों में दर्शन करने के दौरान भी हो रहा है। मगर वहां की अव्यवस्था को लेकर भी खबरें न के बराबर आ रही हैं। निस्संदेह इतनी भारी भीड़ को संभालने में मुट्ठी भर पुलिसकर्मी कभी सफल नहीं हो सकते।

डॉ० चिन्मय पण्ड्या ने रीगा में कराया गायत्री महायज्ञ

जतिन शर्मा

हरिद्वार। अखिल विश्व गायत्री परिवार विश्व के लगभग अस्सी देशों में फैला हुआ है। सभी देशों के परिजन शांतिंकुज, हरिद्वार के प्रति के विशेष आस्था रखते हैं और अपने परिवार व समाज विकास के लिए सामूहिक गायत्री यज्ञ व विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। इन्हीं कार्यक्रमों के संचालन हेतु देवसंस्कृति विवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या अपने यूरोप के प्रवास के दौरान लातविया पहुँचे। उन्होंने लातविया की राजधानी रीगा में नवगठित गायत्री परिवार के सहयोग से गायत्री यज्ञ का भव्य आयोजन का संचालन किया। यह आयोजन बाल्टिक देशों और भारत के बीच गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को और सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ज्ञात हो कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एशिया का पहला और विश्व का सबसे बड़ा बाल्टिक संस्कृति एवं अध्ययन केंद्र स्थापित किया गया है, जहां लातवियाई परिजन लगातार आते हैं। देवसंस्कृति विवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या के मार्गदर्शन में गायत्री परिवार की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्मा की जन्मशताब्दी वर्ष 226 कार्यक्रम की शृंखला के तहत पहली बार लातविया के गायत्री परिवार परिजनों ने ज्योति कलश यात्रा यज्ञ किया। इसमें सौ से अधिक लातवियाई परिजनों ने भाग लिया और अपने घरों में ज्योति कलश व देव स्थापना करवाया और नियमित गायत्री उपासना, साधना व आराधना का संकल्प लिया। युवा आइकान ने बताया कि यह ज्योति कलश अब लिथुआनिया की यात्रा करेगा, जहां गायत्री यज्ञ, देव स्थापना व अन्य कार्यक्रम सम्पन्न करायेगा। उल्लेखनीय है कि यह आयोजन माइनस तीन डिग्री ठंड के बीच संपन्न हुआ। बड़ी संख्या में आध्यात्मिक जिज्ञासुओं की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष रूप से प्रभावशाली बना दिया। इस आयोजन को बाल्टिक और भारतीय संस्कृति के बीच आध्यात्मिक सहयोग के एक नए अध्याय के रूप में देखा गया।

इस तरह की निंदनीय टिप्पणियां हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली और कानून के शासन के लिए सबसे बड़े खतरों में से एक है-बलबीर सिंह

विश्व में सामाजिक रूप में सबसे अग्रणी भूमिका में रहने वाले पंजाबी समाज पर कुछ कुंठित मानसिकता से ग्रसित लोगों द्वारा लगातार अमर्यादित भाषा में टिप्पणियां करने से हरिद्वार के पंजाबी समाज में रोष बना हुआ है। सर्व समाज का सम्मान करने वाले पंजाबी समाज पर पहले भी कुछ उपद्रवियों द्वारा समाज में अराजकता फैलाने के लिए अभद्र टिप्पणियां की गई। आज पुनः ऐसी टिपण्णीयों से पंजाबी समाज के लोगो में रोष है। पंजाबी समाज के बहुत से परिवार भारत की आजादी से भी पूर्व से यहां निवास कर रहें है। कुछ उपद्रवी लोग जो सिर्फ समाज में पंजाबी समाज के लोगो पर गलत तथ्यों पर आधारित टिप्पणियां कर द्वेष भाव को बढाकर अराजकता को बढ़ावा देकर सौहार्दपूर्ण वातावरण को दूषित कर रहे है और नफरत फैलाना चाहते है, ऐसे कुंठित मानसिकता के लोग गलत टिप्पणियां कर समाज में सभी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने और पंजाबी समाज का अपमान करने का कार्य कर रहे है, ऐसे उपद्रवियों पर शीघ्र ही सख्त से सख्त कार्यवाही होनी चाहिए।

व्यक्ति या समूह के प्रति अपमानजनक या भेदभावपूर्ण भाषा का इस्तेमाल करना कदाचित उचित नहीं है

जतिन शर्मा

हरिद्वार। प्रशासन से निवेदन है की किसी भी समाज पर ऐसी टिप्पणियां कर आपसी माहौल खराब करने वाले असामाजिक तत्वों पर सख्त से सख्त कार्यवाही की जाए। महानगर व्यापार मंडल के जिला

अध्यक्ष सुनील सेठी ने पुलिस प्रशासन हरिद्वार वरिष्ट पुलिस अधीक्षक से मांग कर कहा है कि इस तरह की निंदनीय टिप्पणियां हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली और कानून के शासन के लिए सबसे बड़े खतरों में से एक है।

आशाओं का मानदेव बढ़ाने के लिए प्रदर्शन

देहरादून। आशा कार्यकर्ताओं ने मासिक मानदेय बढ़ाने समेत विभिन्न मांगों को लेकर विधानसभा कुच किया। इस दौरान उन्होंने जोरदार प्रदर्शन किया। चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगों पर तत्काल कार्रवाई नहीं हुई थी आंदोलन तेज किया जाएगा। सीटू से संबंध उत्तराखंड आशा स्वास्थ्य कार्यकत्री यूनियन के बैनर तले गुरुवार को विभिन्न जिलों की आशाएं देहरादून में एकत्रित हुई और विधानसभा कूच किया। पुलिस ने रिस्पना पुल से पहले उन्हें रोक दिया। ऐसे में आशाएं वहीं धरने पर बैठ गई। संगठन की प्रांतीय अध्यक्ष शिवा दबे ने कहा कि कोरोना काल में योद्धा की तरह खड़ी आशा कार्यकर्ताओं को फ्रंट लाइन वर्कर सम्मान दिया जाए। सरकार स्वास्थ्य बीमा और मानदेय संबंधी सभी घोषणाओं का शासनादेश जल्दी जारी करें।

बोर्ड परीक्षाओं के बाद होंगे अंतर मंडलीय तबादले

देहरादून। एलटी शिक्षकों के अंतर मंडलीय तबादले बोर्ड परीक्षाओं के बाद होंगे। शिक्षा मंत्री डॉ धन सिंह रावत ने गुरुवार को सदन में यह जानकार दी। प्रश्नकाल के दौरान भाजपा विधायक प्रीतम सिंह पंवार ने एलटी शिक्षकों के अंतर मंडलीय तबादले का प्रश्न उठाया। उन्होंने पूछा कि यह तबादले कब तक हो जाएंगे। शिक्षा मंत्री ने इसके जबाव में बताया कि अंतर मंडलीय तबादलों की प्रक्रिया चल रही है और इसके लिए राज्य भर में कुल 542 शिक्षकों ने आवेदन किया है। उन्होंने कहा कि पांच साल की सेवा पूरी करने वाले इन सभी शिक्षकों के तबादले बोर्ड परीक्षाओं के बाद कर दिए जाएंगे। विधायक बंशीधर भगत ने पूछा कि क्या मृतक आश्रित कोटे में नियुक्त महिला शिक्षकों को मानकों में कुछ छूट प्रदान की जा रही है। इस पर शिक्षा मंत्री ने सकारात्मक आश्वासन देते हुआ कि इस संदर्भ में भी विचार किया जा रहा है। डॉ धन सिंह रावत ने अंतर मंडलीय तबादलों का जिक्र करते हुए कहा कि राज्य में शिक्षक दुर्गम स्थानों पर तैनात नहीं रहना चाहते। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों विभाग की ओर से कराई गई काउंसलिंग में शिक्षकों ने चार से पांच स्थान ले लिए। उन्होंने कहा कि इसके लिए शिक्षकों का ब्लॉक और जिला कैडर बनाने पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 2० से अधिक विधायक भी शिक्षकों के अंतर मंडलीय तबादलों के लिए अनुरोध कर चुके हैं। ऐसे में अब ब्लॉक और जिला स्तर पर कैडर बनाने की योजना है। भाजपा विधायक दलीप रावत ने राज्य में संस्कृत नीति के बारे में जानकारी मांगी। उन्होंने कहा कि राज्य गठन के 25 साल होने वाले हैं लेकिन अभी तक इस संदर्भ में कोई पहल नहीं की गई है। विधायक के इस सवाल के जबाव में शिक्षा मंत्री ने कहा कि राज्य में फिलहाल संस्कृत नीति बनाने की कोई योजना नहीं है।

देवेन्द्र जौहरी
सहसम्पादक
जतिन शर्मा
सहसम्पादक
विक्रान्त शर्मा
कानूनी सलाहकार
जसमहिन्द्र सिंह एडवोकेट

देश में सूचना क्रांति की महत्व बढ़ा

विनीत नारायण

एक बार लॉस एंजेलिस में उद्योगपतियों के एक सम्मेलन को संबोधित करते समय मैंने श्रम आधारित तकनीकी के समर्थन और औद्योगिकरण के विरोध में काफी जोर से भाषण दिया। तब वहां मौजूद एक धनाढय़ उद्योगपति गणपत पटेल ने मुझे एक पुस्तक भेंट की जिसमें बताया गया था कि 192 में अमेरिका में जिन क्षेत्रों में रोजगार काफी मात्रा में उपलब्ध था, वे क्षेत्र 196 के दशक में गायब हो गए। पर इससे बेरोजगारी नहीं बढ़ी क्योंकि अनेक नये रोजगार क्षेत्र विकसित हो गए। उदाहरण के तौर पर 192 के दशक में हाथ की मशीन पर टाइप करने वालों की भारी मांग थी पर कंप्यूटर आने के बाद यह मांग समाप्त हो गई। 192 में हवाई जहाज के पायलटों की कोई मांग नहीं थी। पर बाद में हजारों पायलटों की मांग पैदा हो गई। पटेल ने मुझसे जोर देकर कहा कि तकनीकी आने से बेरोजगारी नहीं बढ़ती। ऐसा ही अनुभव आज देश में सूचना क्रांति को देख कर हो रहा है। सूचना क्रांति ने हर क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में प्रभावित किया है। कुछ वर्ष पहले तक व्यापारी के बही-खातों में आमदनी-खर्च का जो हिसाब रखा जाता था वो इतना माकूल होता था कि उसमें एक पैसे की भी गलती नहीं होती थी। सदियों से भारत में यही प्रथा चल रही थी पर कंप्यूटर क्रांति ने सब बदल कर रख दिया। अब व्यापार के आंकड़े केवल आमदनी खर्च तक सीमित नहीं है। अब तो व्यापारी यह जानना चाहता है कि उसका कौन सा उत्पादन किस इलाके में ज्यादा बिक रहा है। उसके ग्राहक किस वर्ग के हैं। साल के किस महीने में उसकी बिक्री बढ़ जाती है। कौन सी राजनैतिक या सामाजिक घटनाओं के बाद किस वस्तु की मांग अचानक बढ़ जाती है। जैसे-जैसे यह जानकारी उत्पादक या वितरक कंपनी के पास आती-जाती है, वैसे-वैसे उसका नजरिया और नीति बदलने लगती है। जबकि बही-खाते में केवल आमदनी-खर्च या लाभ-घाटे का हिसाब रखा जाता था। सांप्रदायिक दंगों का अंदेशा हो तो अचानक शहर में डबल रोटी, दूध, चाय, कॉफी के पैकेट, दाल-चावल, चीनी, मोमबत्ती, टॉर्च, शस्त्रों की मांग बढ़ जाती है। जाहिर है कि इन वस्तुओं के निर्माताओं को देश की नाड़ी पर इस नजरिए से निगाह रखनी पड़ती है। जिस इलाके में सांप्रदायिक तनाव बढ़े वहां इन वस्तुओं की आपूर्ति तेजी से बढ़ा दी जाए। इसी तरह बरसात से पहले छाते और बरसाती की मांग, गर्मी से पहले कूलर और एसी की मांग, जाड़े से पहले हीटर और गीजर की मांग बढ़ जाना सामान्य सी बात है। पर एसी बीस हजार रु पये वाला बिकेगा या पचास हजार रु पये वाला, यह जानने के लिए उसे ग्राहकों का मनोविज्ञान और उनकी हैसियत जानना जरूरी है। अगर निम्न वर्गीय रिहायशी क्षेत्र में लिप्टन की ग्रीन लेबल चाय के डिब्बे दुकानों पर सजा दिए जाएं तो शायद एक डिब्बा भी न बिके पर रेड लेबल चाय धड़ल्ले से बिकती है। धनी बस्ती में पांच रु पये वाला ग्लूकोज बिस्कुट का पैकेट खरीदने कोई नहीं आएगा पर पांच सौ रु पये किलो की कूकीज के पैकेट धड़ल्ले से बिकते हैं। इसलिए इन कंपनियों को हर पल बाजार और ग्राहक के मूड पर निगाह रखनी होती है। इससे ये कंपनियां कई अहम फैसले ले पाती हैं। मसलन, उत्पादन कब, कैसा और कितना किया जाए। वितरण कहां, कब और कितना किया जाए। विज्ञापन का स्वरूप कैसा हो। उसमें किस वर्ग का प्रतिनिधित्व किया जाए और क्या कहा जाए जो ग्राहक का ध्यान आकर्षित कर सके। इसी सूचना संकलन का असर था कि 1 वर्ष पहले सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपने विज्ञापन अंग्रेजी की बजाय क्षेत्रीय भाषाओं में देने शुरू कर दिए। वरना हमारे बचपन में तो लक्स साबुन का विज्ञापन हिन्दी के अखबार में भी अंग्रेजी भाषा में आता था। जब सूचना का इतना महत्त्व बढ़ गया है तो जाहिर है कि इस सूचना को एकत्र करने वाले, प्रोसेस करने वाले और उसका विश्लेषण करने वाले सभी की मांग बजार में बेहद बढ़ गई है। यहां तक कि केवल इसी किस्म की सेवाएं देने वाली कंपनियों की बाढ़ आ गई है। जैसे पहले शेयर मार्केट को चलाने वाले बड़े-बड़े दलाल और बड़ी कंपनियां होती थीं पर आज इंटरनेट की मदद से देश के हर कस्बे और शहर में शेयर मार्केट में खेलने वाली हजारों कंपनियां खड़ी हो गई हैं। अर्थव्यवस्था ही नहीं, कानून की स्थिति को बनाए रखने के लिए भी इस सूचना क्रांति ने भारी मदद की है। आज अपराधियों या आतंकवादियों के बारे में सूचना का भंडार पुलिस विभाग के पास उपलब्ध है, और आवश्यकता पडऩे पर मिनटों में देश में इधर से उधर भेज दिया जाता है। इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में भी इस सूचना क्रांति ने शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के सैकड़ों दरवाजे खोल दिए हैं। आज देश के लगभग सभी शहरों, गांवों और कस्बों में इंटरनेट की मदद से बच्चों के पास दुनिया भर की जानकारी बड़ी आसानी से पहुंच रही है। जब 1985 में देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कंप्यूटराइजेशन की बात की थी तो विपक्षी दलों और उनसे जुड़े पत्रकारों ने श्री गांधी का खूब मखौल बनाया था। उन पर कार्टून बनाए गए थे जिनमें दिखाया गया कि भूखे लोगों को राजीव गांधी कंप्यूटर सिखा रहे हैं। उस वक्त हमला करने वाले सभी राजनैतिक दल आज सबसे ज्यादा कंप्यूटर का प्रयोग कर रहे हैं। यह अनुभव यही बताता है कि हम राजनीति में हों या मीडिया में, तथ्यों का विवेकपूर्ण मूल्यांकन करें तो देश का लाभ होगा। विरोध के लिए विरोध करना सनसनीखेज तो हो सकता है पर इससे जनहित नहीं सधता। क्या यह बात हमारे देश के सभी सांसद सोचेंगे?

सोता रहा रेलवे, रोती रही आस्था

नितिनमोहन शर्मा

नईदिल्ल स्टेशन पर बढ़ती बेतहाशा भीड़ का सीसीटीवी पर रेलवे के मौके पर मौजूद अफसरों को नजऱ नही आ रही थी? दिल्ली हादसे पर इंदौर के अखबार खुलासा फर्स्ट द्वारा उठाया ये सवाल हादसे की जांच का मुख्य बिंदु बन गया हैं। ऐसे ही आज भी एक सवाल सबसे मोजू है कि 13 जनवरी यानी कुंभ के आगाज़ के साथ ही रेल के सफऱ के बुरे हाल मोदी सरकार के रेल मंत्रालय को नजऱ नही आ रहें थे? रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव स्टेशनों व प्लेटफॉर्म पर पसरी अराजकता से अंजान थे? डिब्बों में तोडफ़ोड़ करने के समाचार व दृश्य से मंत्री महोदय बेख़बर क्यो बने रहें? महिनों पहले महंगे टिकट रिजर्वेशन कर कुंभ नगरी जाने वाले लाखों लोगों के बुरे हाल पर भी भारत सरकार का रेल मंत्रालय क्यो चेन की नींद सोता रहा? अब अगर विपक्ष रेल मंत्री का इस्तीफा मांग रहा है तो वह राजनीति का विषय कैसे हो गया? ये तो शुद्ध आस्था का विषय है कि रेलवे मंत्रालय, रेल मंत्री सोते रहे और आस्था रोती रही। दबती रही, कुचलती रही, दम तोड़ती रही। % आस्थावान सरकार%, आस्था के प्रति इस बेफ़िक्री पर मंत्री को दंड देगी? या मंत्री महोदय के मानस में व्याप्त नैतिकता उन्हें झकझोरेगी? जिन्होंने रेल मंत्रालय की परिधि में अपनों को खोया, वे ही नही...देश की इस पर नजरें हैं। महाकुंभ तक आने जाने के लिए रेल से सफऱ के जो नज़ारे देश-दुनिया देख रही थी, वो क्या रेल मंत्रालय को नजऱ नही आ रही थी? कांच फोड़ते, खिडक़ी तोड़ते, इंजिन में घुसते, डिब्बों में दबते, स्टेशनों पर कुचलते लोग क्या रेलवे के अफ़सरों को नही दिख रहें थे? जब से कुंभ का शुभारंभ हुआ, रेल के सफऱ के बुरे हाल दृश्य श्रव्य माध्यमों पर सरेआम दिखाए जा रहें थे, बावजूद इसके रेलवे के जिम्मेदार सोते रहे और निर्दोष आस्था रोने बिलखने को मजबूर होती रहीं। आखिऱ रेलवे मंत्रालय की जवाबदेही क्यो तय नही होती? जिम्मेदार अफ़सर अब तक दंड के दायरे से क्यो बाहर हैं? जो व्यवस्था दिल्ली में हादसे के दूसरे दिन यानी रविवार को हुई, वह शनिवार को क्यो नही हो पाई? इसका जवाब हैं क्या किसी के पास? क्या केवल स्पेशल ट्रेन चला भर देने से रेलवे की इतने बड़े आस्था के उत्सव के लिए काफ़ी था? रेल वाले स्पेशल ट्रेनों के आंकड़े गिना रहें हैं लेकिन् इन स्पेशल ट्रेनों में सफऱ कैसे हो रहा हैं, इस पर किसी का ध्यान क्यो नही गया? 13 जनवरी से रेल के सफर के बुरे हाल सब तरफ़ चर्चा में थे। बावजूद इसके रेल मंत्रालय क्या करता रहा? ये सवाल विपक्ष का ही नही, जन जन का हैं। जवाब देना ही पड़ेगा। अन्यथा ये माना जायेगा कि रेल मंत्रालय ने ही आस्था से अभिभूत जनसामान्य को मरने के लिए छोड़ा था। रिज़र्वेशन क्लास के डिब्बो में जिस तरह से अराजकता पसर रही थी, वह वक्त रहते क्यो नही थामी गई? लोगों में एसी कोच तक को नही बख़्शा। उसके हाल भी जनरल डिब्बे से बदतर कर दिये। दरवाज़ों को ल मार कर तोड़ा जा रहा था। एसी कोच के कांच फोड़े जा रहें थे। एक डिब्बे में एक हज़ार यात्रियों के घुसने, दबने के नज़ारे क्या सिर्फ़ देश ही देख रहा था? मोदी सरकार का रेल मंत्रालय इस सबसे बेख़बर था? अगर नही था तो फिऱ ये सीधे जिम्मेदारी रेल मंत्री महोदय की नही बनती क्या? प्रयागराज आने जाने वाले तमाम रेलवे स्टेशनों पर एक जैसे हालत थे। फिऱ चाहे वह सतना हो या पटना या फिऱ दिल्ली हो या भोपाल। हज़ारों की भीड़ हर स्टेशनों पर पहुँच रही थी लेकिन् वह भगवान भरोसे क्यो छोड़ दी गई? आम आदमी का प्रयागराज सफऱ तो रेलवे के जरिये ही पूरा होना था। उसके पास कहा कार व अन्य चार पहिया वाहन हैं। वह तो बाल बच्चो सँग रेलवे स्टेशन की तरफ ही बढ़ेगी। आखिऱ रेल ही तो आस्था के इस रेले का कुंभ नगरी जाने का एकमात्र जरिया थी। बावजूद इसके भारत सरकार का रेल मंत्रालय क्या करता रहा? सिर्फ़ स्पेशल ट्रेन चला देने या रेल के फेरे बढ़ा देने तक ही उसकी जवाबदारी थी?

हादसे के बाद के बंदोबस्त पहले से लागू क्यों नही हुए?

रेल मंत्रालय की स्टेशन के अंदर, बाहर व डिब्बों के अंदर बाहर के हालात पर कोई तेयारी क्यो नही थी? कुंभ नगरी तक न पहुँचने का स्टेशनों पर पसरते गुस्से पर भी वह आंखें मूंदे क्यो बैठा रहा? सिर्फ़ जीआरपी के ज़रिए हज़ारों लाखों लोगों को संभालने तक ही रेलवे क्यो सीमित रहा? स्थानीय पुलिस महक़मा रेलवे का सहयोगी क्यो नही बनाया गया? जैसा दिल्ली में शनिवार को हुए मौत के तांडव के बाद रविवार को स्थानीय पुलिस की मदद ली गई, वैसा कुंभ की शुरुआत से ही क्यो नही किया गया?

प्रयाग जंक्शन जैसी व्यवस्था रेलवे ने हर स्टेशन पर क्यो नही की?

प्रयागराज में योगी सरकार ने पहले ही दिन से स्थानीय पुलिस को भी रेलवे स्टेशनों की जवाबदारी दी। स्टेशन के अंदर बेतहाशा भीड़ नही बढऩे देने व प्लेटफॉर्म पर कतारबद्ध लोगो को जाने देने का काम योगी सरकार ने किया। नतीज़े में जहाँ करोडों पहुँचे, वहां एक भी हादसा रेलवे स्टेशन पर नही हुआ। जबकि जो दिल्ली में हुआ, वह हूबहू 213 कुंभ में इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर हुआ था। प्रयाग जंक्शन की व्यवस्था रेलवे मंत्रालय ने हर स्टेशन पर क्यो नही की? क्यो नही उसने हर उस स्टेशनों पर पुलिस मदद की जरूरत महसूस नही हुई, जहाँ बोगियों में घुसने की मारामारी चंल रही थी?

स्थानीय पुलिस, अफ़सरों को रेलवे के न्यौते का इंतज़ार या घटना का?

दिल्ली हादसे के बाद भी हालातों से रेलवे कुछ नही सीखा। सीखता होता तो रविवार को इंदौर, भोपाल, रीवा, सतना, इटारसी में वैसे ही हालात क्यो बनते? अब भी रीवा, जबलपुर, सतना रुट पर स्टेशन व प्लेटफॉर्म पर हालात जस के तस बने हुए हैं। वही मुठीभर जीआरपी का अमला और हज़ारों हज़ार मुसाफिर। शायद रेलवे को इन स्टेशनों पर भी किसी हादसे का इंतज़ार हैं। इंतज़ार में तो स्थानीय पुलिस भी वैसे ही है, जैसे दिल्ली की थी। जिस तरह दिल्ली पुलिस कमिश्नर घटना के बाद स्टेशन पर बंदोबस्त के लिए पहुचे, वैसे ही स्थानीय अफ़सर शायद किसी घटना का इंतज़ार कर रहें हैं या रेलवे के न्यौते-मनुहार का? है न?

कांवड़ यात्रा में बढ़ी भीड़

हरिद्वार । मंनगरी में गुरुवार को कांवड़ियों की संख्या बढ़ गई। बारिश के बावजूद भी बाजार में भीड़ नजर आई। इस कारण हाईवे पर वाहनों का दबाव अधिक रहा। सुबह चंडीघाट चौक के पास वाहनों की लंबी कतार लग गई। फाल्गुनी कांवड़ में इन दिनों हरिद्वार में कांवड़ियों की संख्या बढ़ गई है। 26 फरवरी को महाशिवरात्रि है। इससे पूर्व गुरुवार को बड़ी संख्या में कांवड़ियों के हरिद्वार पहुंचने शुरू हो गए हैं। चंडीघाट पुल पर कांवड़ियों की अधिक भीड़ होने से वाहनों की आवाजाही अभी तो कोई दिक्कत नहीं आ रही है,

मंत्री डॉ अग्रवाल द्वारा बजट में ऋषिकेश का विशेष ध्यान पर कार्यकर्ताओं ने दी बधाई

जतिन शर्मा

ऋषिकेश। क्षेत्रीय विधायक व वित्त मंत्री डॉ प्रेमचंद अग्रवाल द्वारा पंचम विधानसभा में लगातार चौथी बार बजट रखने तथा ऋषिकेश के लिए बजट में विशेष ध्यान रखने के लिए कार्यकर्ताओं ने उनको बधाई दी है। बैराज रोड स्थित कैम्प कार्यालय में पार्षद राजेश कुमार ने वित्त मंत्री का आभार प्रकट करते हुए कहा कि उन्होंने बजट में गोविंद नगर ऋषिकेश में विगत वर्षों में एकत्रित हुए लिगेसी वेस्ट के निस्तारण के लिए 6 करोड़ 45 लाख रुपए का प्रावधान किया है और खुशी की बात है कि इसकी डीपीआर स्वच्छ भारत मिशन-2 के अंतर्गत स्वीकृत भी हुई है। इसके अलावा बजट में लिगेसी वेस्ट के निस्तारण के

लिए अतिरिक्त धनराशि की पूर्ति रिंग फेंसड अकाउंट से तथा बजट में पार्क के सौंदर्यकरण तथा ओपन जिम का भी प्रावधान किया है। पूर्व पार्षद विकास तेवतिया ने कहा कि वित्त मंत्री ने बजट में कावड़ मेले के लिए ०7 करोड रुपए, जबकि ऋषिकेश में हिमालय संग्रहालय की स्थापना के लिए ०2 करोड़ 64 लाख रुपए का प्रावधान किया है। भाजपा कार्यकत्री पुनीता भंडारी ने कहा कि ऋषिकेश के पुनर्विकास द्वारा धरोहर संरक्षण को पर्यावरणीय स्थिरता और आधुनिक सुविधाओं के साथ सहज रूप से एकीकृत करने के जाने की योजना को बजट में स्थान मिला है। पार्षद संध्या बिष्ट ने कहा कि योगनगरी ऋषिकेश को विश्व स्तरीय बनाये जाने के लिए यहाँ स्वच्छता के लिए होलिस्टिक अप्रोच का भी बजट में जिक्र है। इस अवसर पर पार्षद राजेश कुमार, तनु तेवतिया, आशु डंग, अजय दास, संध्या बिष्ट, ममता रतूड़ी, पुनिता भंडारी, रिंकी राणा, पूनम डोभाल, सुमन रावत, पिंकी धस्माना, मनोरमा, ममता सकलानी, विशाल कक्कड़, चमन पोखरियाल, एकांत गोयल, जितेंद्र पाल, सौरभ उनियाल, सुधांशु बिजल्वाण, अमित सेमवाल, व्यापारी नेता अखिलेश मित्तल, अरुण बडोनी आदि उपस्थित रहे।

राजभवन में अरुणाचल प्रदेश एवं मिजोरम राज्य का स्थापना दिवस मनाया गया

देहरादून। राजभवन में अरुणाचल प्रदेश एवं मिजोरम राज्य का स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दोनों राज्यों के उत्तराखण्ड में रह रहे छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर अरुणाचल प्रदेश के छात्र-छात्राओं ने अपने पारंपरिक लोकनृत्य प्रस्तुत किए। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दोनों राज्यों के पारंपरिक नृत्य, संगीत और लोक कला की झलक देखने को मिली। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने इस कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए उपस्थित सभी लोगों को पूरे प्रदेश की ओर से स्थापना दिवस की बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को सशक्त करने के लिए देश के विभिन्न राज्यों के स्थापना दिवस को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने की परंपरा प्रारंभ की गई है। यह पहल राज्यों के बीच आपसी संवाद, सांस्कृतिक साझेदारी और राष्ट्रीय एकता को और अधिक मजबूत करती है। राज्यपाल ने सेना में सेवा के दौरान यहां कार्य करने के अनुभवों को साझा किया और कहा कि पूर्वोत्तर के ये दोनों राज्य अपनी समृद्ध परंपराओं, जैव विविधता और सुरम्य प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक विरासत, संगीत, नृत्य के लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा कि अरुणाचल प्रदेश राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, और यहाँ के वीर जवानों का भारतीय सेना में योगदान हमेशा प्रेरणादायक रहा है। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि वे 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प को और अधिक सशक्त करें और राष्ट्र को प्रगति के नए शिखर पर ले जाएँ।

एम्स ऑडटोरियम में आरोग्य योग यात्रा कार्यक्रम का आयोजन

जतिन शर्मा

ऋषिकेश। एम्स व एफओजीएसआई के संयुक्त तत्वावधान में संस्थान केऑडिटोरियम में आरोग्य योग यात्रा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बताया गया कि एफओजीएसआई की इस पहल का उद्देश्य स्वास्थ्य, योग के लाभों के बारे में जन सामान्य को जागरुकता करना और योग से होने वाले लाभ को आधुनिक चिकित्सा के साथ शामिल करना है। एम्स ऑडटोरियम में आयोजित आरोग्य योग यात्रा कार्यक्रम का बतौर मुख्य अतिथि एनएचएम की निदेशक आईएएस स्वाति एस. भदौरिया, अति विशिष्ट अतिथि डॉ. स्वामी दयाधीपानंद महाराज, संस्थान की कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ प्रोफेसर (डॉक्टर) मीनू सिंह, एफओजीएसआई की अध्यक्ष डॉ. सुनीता तंदुलवाडकर, संयोजक एवाईवाई डॉ. जयम कन्नन, उपाध्यक्ष एफओजीएसआई डॉ. श्यामल सेठ, एम्स डीन अकादमिक और ओबीएस और स्त्री रोग विभागाध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ.) जया चतुर्वेदी व चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर सत्यश्री बलिजा ने संयुक्तरूप से दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत शुभारंभ किया। सत्र की शुरुआत योगी अमृतराज के निर्देशन में योग साधकों द्वारा कुर्सी योग प्रदर्शन से हुई। डीन अकादमिक और प्रसूति एवं स्त्री रोग विभागाध्यक्ष प्रो. जया चतुर्वेदी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साथ ही डीन एकेडमिक ने जनसामान्य को कार्यक्रम की विषयवस्तु से अवगत कराया। इस अवसर पर संस्थान की कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ प्रो. मीनू सिंह ने आध्यात्म और चिकित्सा के एकीकरण के महत्व पर जोर दिया और 'ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है' की ओर ध्यान आकर्षित किया। एफओजीएसआई अध्यक्ष डॉ. सुनीता ने आधुनिक चिकित्सा पद्धति में आध्यात्मिकता के गहन ज्ञान को एकीकृत करने का महत्व व इससे जनसामान्य को होने वाले लाभ से अवगत कराया। उन्होंने इस एकीकरण से स्वयं के साथ गहरे संबंध और उपचार में इसके सार के बारे में बात की। मुख्य अतिथि आईएएस स्वाति भदौरिया ने महिलाओं और मातृ स्वास्थ्य देखभाल के मद्देनजर एनएचएम के तहत संचालित विभिन्न कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला और जनसामान्य को इन कार्यक्रमों से होने वाले लाभ से अवगत कराया व इन कार्यक्रमों के संचालन में जुटे सभी स्वास्थ्य कर्मियों के हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया। उन्होंने किसी भी समुदाय के समग्र स्वास्थ्य के प्रमुख संकेतक के रूप में मातृ और शिशु स्वास्थ्य के महत्व पर जोर दिया।

रामकृष्ण मिशन अस्पताल, मुंबई के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. स्वामी दयाधीपानंद ने व्याख्यान में सभी के समक्ष स्वामी विवेकानंद के विचारों को साझा किया, जिसमें समग्र कल्याण को बढ़ावा देने और सामाजिक लाभ के लिए स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यक्रम में ऋषिकेश और समीपवर्ती क्षेत्र के वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञों को मरीजों की स्वास्थ्य सेवा में सतत योगदान के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में संस्थान की प्रोफेसर शालिनी राजाराम, प्रो. अनुपमा बहादुर, प्रो. वंदना ढींगरा, प्रो. रश्मि मल्होत्रा, डॉ. पंकज शर्मा, डॉ. लतिका चावला, डॉ. कविता खोईवाल, डॉ. राजलक्ष्मी मुंदड़ा, डॉ. ओम कुमारी, डॉ. पूनम गिल आदि ने शिरकत की।

नये आविष्कार दे रही रसायन व भौतिकी की साझेदारी

देहरादून। विशेषज्ञों ने कहा कि रसायन व भौतिक विज्ञान की साझेदारी से बने उत्पाद अत्याधुनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। इन उत्पादों से तकनीक के साथ ही दैनिक जीवन में भी सुधार हो रहा है। विशेषज्ञों ने यह बात गुरुवार को ग्राफिक एरा डीम्ड यूनिवर्सिटी में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में कही। पदार्थों के रसायन व भौतिकी विज्ञान विषय पर आयोजित यह सम्मेलन तीन दिन चलेगा। अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को निट्टे मीनाक्षी इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी बंगलुरू के प्रोफेसर डा. संदीप कुमार ने कहा कि डिस्कोटिक लिक्विड क्रिस्टल, ठोस व तरल अवस्था के बीच एक मध्य अवस्था में होते हैं।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
देवेन्द्र जौहरी द्वारा
साप्ताहिक समाचार पत्र
''गुरुकृपा दर्पण'' को
रूद्र प्रिंटिग प्रेस, ई-34,
ओल्ड इड्रस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं
एस-3, अशोक विहार कालोनी,
कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
से प्रकाशित।
सम्पादक: **देवेन्द्र जौहरी**
मो. - **9997331129**
E-mail :
gurukripadarpan@gmail.com